

1. हम करें राष्ट्र आराधन

- डॉ विश्वनाथ शुक्ल

हम करें राष्ट्र आराधन।

तन से, मन से, धन से, तन-मन-धन जीवन से।

अन्तर से, मुख से, कृति से, निश्छल हो निर्मल मति से,
श्रद्धा से, मस्तक नीति से- हम करें राष्ट्र अभिवादन।

अपने मधुरतम शैशव से, अपने खिलते यौवन से,
प्रौढ़ता पूर्ण जीवन से, हम करें राष्ट्र का अर्चन।

अपने अतीत को लिखकर, अपने इतिहास पलट कर,
अपना भविष्य समझकर, हम करें राष्ट्र का चिन्तन।

हैं याद हमें युग-युग की चलती अनेक घटनाएं,

जो माँ के सेवा पथ पर, आयी बनकर विपदाएं।

हमने अभिषेक किया था, जननी का अरिशोणित से,

हमने श्रृंगार किया था, जननी की अरि-मुण्डों से।

हमने ही उसे दिया था, सांस्कृतिक उच्च सिंहासन,

माँ जिस पर बैठी सुख से, करती थी जग पर शासन।

पर कालचक्र की गति से, जो जर्जर हुआ सिंहासन,

निज तन-मन-धन जीवन दे, हम करें पुनः संस्थापन।

अभ्यास

1. हमें राष्ट्र का आराधन किस प्रकार करना चाहिए ?
2. प्राचीन भारत को कवि क्यों याद करना चाहता है ?
3. भारतीयों ने भारत-माँ की किस प्रकार रक्षा की थी ?

